जपुजी साहिब

ੴ सतनामु करता पुरखु नरिभउ नरिवैरु अकाल मूरति
अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥

॥ जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥
इकना हुकमी बखसीस इक हुकमी सदा भवाईअहि ॥

हुकमै अंदरि सिभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥
गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥
गावै को गुण वडआईआ चार ॥
गावै को विदिआ विखिमु वीचारु ॥
गावै को साजि करे तनु खेह ॥
गावै को जीअ लै फरि देह ॥
गावै को जापै दिसै दूरि ॥
गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥
कथना कथी न आवै तोटि ॥
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥
देदा दे लैदे थकि पाहि ॥
जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥
हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥
नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥
अम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥
आपे आपि निरंजनु सोइ ॥
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥
नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥

गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै वसिरि नि जाई ॥५॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा वणु भाणे कि नाइ करी ॥
जेती सरिठि उपाई वेखा वणु करमा कि मिलै लई ॥
मति विचि रितन जवाहर माणकि जे इक गुर की सखि सुणी ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै वसिरि नि जाई ॥६॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥
जे तिसु नदरि नि आवई त वात न पुछै के ॥
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥
नानक नरिगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥

सुणिऐ सधि पीर सुरि नाथ ॥
सुणिऐ धरति धवल आकास ॥

सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥
सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥
सुणिऐ मुखि सिलाहण मंदु ॥
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥
सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥
सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥

मंने की गति कही न जाइ ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु ॥
मंने का बहि करनि वीचारु ॥
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥
मंनै सगल भवण की सुधि ॥
मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥
मंनै जम कै साथि न जाइ ॥

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥

मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥

मंनै मगु न चलै पंथु ॥

मंनै धरम सेती सनबंधु ॥

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥

मंनै परवारै साधारु ॥

मंनै तरै तारे गुरु सखि ॥

मंनै नानक भवहि नि भखि ॥

ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥

जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥

पंच परवाण पंच परधानु ॥

पंचे पावहि दरगहि मानु ॥

पंचे सोहहि दरि राजानु ॥

पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥

जे को कहै करै वीचारु ॥

करते कै करणै नाही सुमारु ॥

धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥

संतोखु थापि रखिआ जनि सूति ॥

जे को बुझै होवै सचिआरु ॥

धवलै उपरि केता भारु ॥

धरती होरु परै होरु होरु ॥

तसि ते भारु तलै कवणु जोरु ॥

जीअ जाति रंगा के नाव ॥

सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥

एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥

लेखा लिखिआ केता होइ ॥

केता ताणु सुआलहि रूपु ॥

केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥

कीता पसाउ एको कवाउ ॥

तसि ते होए लख दरीआउ ॥

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

वारिआ न जावा एक वार ॥

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

असंख जप असंख भाउ ॥

असंख पूजा असंख तप ताउ ॥

असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥

असंख जोग मनि रहहि उदास ॥

असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥

असंख सती असंख दातार ॥

असंख सूर मुह भख सार ॥

असंख मोनि लिवि लाइ तार ॥

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

वारिआ न जावा एक वार ॥

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥

असंख मूरख अंध घोर ॥

असंख चोर हरामखोर ॥

असंख अमर करि जाहि जोर ॥

असंख गलवढ हतआ कमाहि ॥

असंख पापी पापु करि जाहि ॥

असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥

असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥

असंख नदिक सरि किरहि भारु ॥

नानकु नीचु कहै वीचारु ॥

वारिआ न जावा एक वार ॥

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

असंख नाव असंख थाव ॥

अगम अगम असंख लोअ ॥

असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥

अखरी नामु अखरी सालाह ॥

अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥

अखरी लिखिणु बोलणु बाणि ॥

अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥

जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥

जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥

जेता कीता तेता नाउ ॥

विणु नावै नाही को थाउ ॥

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

वारिआ न जावा एक वार ॥

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥

पाणी धोतै उतरसु खेह ॥

मूत पलीती कपड़ु होइ ॥

दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥

भरीऐ मति पापा कै संगि ॥

ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥

पुंनी पापी आखणु नाहि ॥

करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥

आपे बीजि आपे ही खाहु ॥

नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥

जे को पावै तलि का मानु ॥

सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥

अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥

सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥

वणु गुण कीते भगति न होइ ॥

सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥

सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥

कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥

कवणसि रुती माहु कवणु जतु होआ आकारु ॥
वेल न पाईआ पंडती जसि होवै लेखु पुराणु ॥
वखतु न पाइओ कादीआ जसि लिखनि लेखु कुराणु ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥
जा करता सरिठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
कवि करि आखा कवि सालाही कवि वरनी कवि जाणा ॥
नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥
वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥
पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥
सहस अठारह कहनि कितेबा असुलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥
सालाही सालाहि एती सुरति नि पाईआ ॥
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि नि जाणीअहि ॥

समुंद साह सुलतान गरिहा सेती मालु धनु ॥
कीड़ी तुलि न होवनी जे तसिु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

अंतु न सफिती कहणि अंतु ॥
अंतु न करणै देणि अंतु ॥
अंतु न वेखणि सुणणि अंतु ॥
अंतु न जापै कआि मनि मिंतु ॥
अंतु न जापै कीता आकारु ॥
अंतु न जापै पारावारु ॥
अंत कारणि केते बलिलाहि ॥
ता के अंत न पाए जाहि ॥
एहु अंतु न जाणै कोइ ॥
बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
वडा साहबिु ऊचा थाउ ॥
ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ ॥
तसिु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥

जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥
नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

बहुता करमु लखिआ ना जाइ ॥
वडा दाता तिलु न तमाइ ॥
केते मंगहि जोध अपार ॥
केतिआ गणत नही वीचारु ॥
केते खपि तुटहि विकार ॥
केते लै लै मुकरु पाहि ॥
केते मूरख खाही खाहि ॥
केतिआ दूख भूख सद मार ॥
एहि भि दाति तेरी दातार ॥
बंदि खलासी भाणै होइ ॥
होरु आखि न सकै कोइ ॥
जे को खाइकु आखणि पाइ ॥
ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥
आपे जाणै आपे देइ ॥

आखहि सि भि केई केइ ॥

जसि नो बखसे सफिति सिलाह ॥

नानक पातसिही पातसिहु ॥२५॥

अमुल गुण अमुल वापार ॥

अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥

अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥

अमुल भाइ अमुला समाहि ॥

अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥

अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥

अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥

अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥

अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥

आखि आखि रहे लवि लाइ ॥

आखहि वेद पाठ पुराण ॥

आखहि पड़े करहि विखिआण ॥

आखहि बरमे आखहि इंद ॥

आखहि गोपी तै गोविंद ॥

आखहि ईसर आखहि सिध ॥

आखहि केते कीते बुध ॥

आखहि दानव आखहि देव ॥

आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥

केते आखहि आखणि पाहि ॥

केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥

एते कीते होरि करेहि ॥

ता आखि न सकहि केई केइ ॥

जेवडु भावै तेवडु होइ ॥

नानक जाणै साचा सोइ ॥

जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥

ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥

वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥

केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥

गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥

गावहि चितु गुपतु लखि जाणहि लखि लखि धरमु वीचारे ॥

गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥

गावहि इंद इदासणि बैठे देवतआ दरि नाले ॥

गावहि सिधि समाधी अंदरि गावनि साध वचारे ॥

गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥

गावनि पिंडति पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥

गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥

गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥

गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥

गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥

सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥

होरि केते गावनि से मै चति नि आवनि नानकु कआ वीचारे ॥

सोई सोई सदा सचु साहबु साचा साची नाई ॥

है भी होसी जाइ न जासी रचना जनि रचाई ॥

रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जनि उपाई ॥

करि करि वेखै कीता आपणा जवि तसि दी वडआई ॥

जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥
आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥

आदेसु तसै आदेसु ॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥

जो किछु पाइआ सु एका वार ॥

करि किरि वेखै सरिजणहारु ॥

नानक सचे की साची कार ॥

आदेसु तसै आदेसु ॥

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥

इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥

लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥

एतु राहि पति पिवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥

सुणि गिला आकास की कीटा आई रीस ॥

नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥

जोरु न मंगणि देणि नि जोरु ॥

जोरु न जीवणि मिरणि निह जोरु ॥

जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥

जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥

जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥

जसि हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥

नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

राती रुती थिती वार ॥

पवण पाणी अगनी पाताल ॥

तसि वचि धरती थापि रखी धरम साल ॥

तसि वचि जीअ जुगति के रंग ॥

तनि के नाम अनेक अनंत ॥

करमी करमी होइ वीचारु ॥

सचा आपि सचा दरबारु ॥

तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥

नदरी करमि पवै नीसाणु ॥

कच पकाई ओथै पाइ ॥

नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

धरम खंड का एहो धरमु ॥

गिआन खंड का आखहु करमु ॥

केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥

केते बरमे घाड़ति घिड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥

केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥

केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥

केते सधि बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥

केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥

केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥

केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥

तथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥

सरम खंड की बाणी रूपु ॥

तथै घाड़ति घिड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥

ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥

जे को कहै पिछै पछुताइ ॥

तथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥
तथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥

करम खंड की बाणी जोरु ॥
तथै होरु न कोई होरु ॥
तथै जोध महाबल सूर ॥
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥
तथै सीतो सीता महिमा माहि ॥
ता के रूप न कथने जाहि ॥
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥
तथै भगत वसहि के लोअ ॥
करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥
सच खंडि वसै निरंकारु ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तथै खंड मंडल वरभंड ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥

तथै लोअ लोअ आकार ॥

जवि जवि हुकमु तवै तवि कार ॥

वेखै वगिसै करि वीचारु ॥

नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

जतु पाहारा धीरजु सुनआरु ॥

अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥

भउ खला अगनि तप ताउ ॥

भांडा भाउ अम्रितु तितु ढालि ॥

घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥

जनि कउ नदरि करमु तनि कार ॥

नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

सलोकु ॥

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥

दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥

करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि॥

नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि॥१॥

www.nitnempath.com